International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 550-552

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 550-552
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-01-2021
Accepted: 23-02-2021

डॉ नीरज नौटियाल
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत),
महायोगी गुरू गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय, बिथ्याणी यमकेश्वर पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड, भारत

Corresponding Author:
डॉ नीरज नौटियाल
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत),
महायोगी गुरू गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय, बिथ्याणी यमकेश्वर पौडी गढवाल, उत्तराखण्ड, भारत

संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श

डॉ नीरज नौटियाल

प्रस्तावना

वेदो मे स्त्री विमर्श

वेद शब्द संस्कृत व्याकरण के अनुसार विद् ज्ञाने धातु से सिद्ध होता है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता हैविद् ज्ञानेविद् सतायाम् विदलृ लाभेंविद् विचारणे । इस प्रकार से वेद शब्द का अर्थज्ञान एवंजाननाहोताहै आचार्य स्वामी करपात्री महाराज जी ने दार्शनिक एवं याज्ञिक दृष्टियों का समन्वय करते हुये वेद का विशिष्ट लक्षण इस प्रकार किया है । शब्दातिरिक्तं शब्दोपजीविप्रमाणातिरिक्तं च यत्प्रमाणं तज्जन्यप्रमिति विषयानतिरिक्तार्थको यो यस्तदन्यत्वे सति आमुष्मिक सुखजनकोचारणकत्वे सति जन्यज्ञानाजन्यो यो प्रमाणशब्दस्तत्वं वेदत्वम्। सर्वविदित है कि संसार का सर्वज्ञानराशी वेदो मे ही विद्यमान ह अतैव स्त्री विमर्शविषयक तत्व को भी वेदो से देखना वास्तिविकता होगी ऋग्वेदकालीन समाज मे स्त्री की दशा उच्च एवं आदर्श के साथ थी जिसक अनेक स्थलोंपर भरपूर उदाहरण दृष्टिगोचर होते है ।

स्त्री शब्द की व्युत्पति पर विचार करनेपर अनेक विद्वानों के विभिन्न मत प्राप्त होतेहै।वैदिक संहिताओं में नारी डा॔मालती शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक के द्वितीय अध्याय मे स्त्री शब्द के व्युत्पति के विषय मे कृत अन्वेषण मे इस प्रकार व्युत्पति प्राप्त होती है–स्त्री ऋ क् संहिता (1.164.16/5.61.6) में ''स्त्री'' शब्द का पुमास (मनुष्य) और एक बार ''वृषन्'' (पुरूष) के विपरीत प्रयोग हुआ है ।इसी क्रम मे ऋक् संहिता दशम मण्डल में उर्वशी द्वारा पुरूरवा को सम्बोधित करते हुये कहा गया है कि '' स्त्रियो का हृदय वृक् (भेडिया) के समानहोता है । इनकी मित्रता कभी अटूट नही होती है ।

ऋक् संहिता 8/33/17 में स्त्रियाअशास्य मन्'' मे भी स्त्री शब्द का प्रयोग आया है ˙

यथा–मैत्रायणी संहिता, काठकसंहिता, में निरूक्तकार ने स्त्री शब्द का प्रयोग किया है ।

स्त्री शब्द की व्युत्पति करते हुए '' स्त्यै –स्त्यायातिगर्भो यस्यामिति'' ऐसा कहा गया है। स्त्यै –स्त्यायते से डट् प्रत्यय ङीपहोने से ''स्त्री'' रूप बनता है । क्षीरस्वामी ने भी कि नारी को स्त्री इसलिये कहा जाता है क्योंकि गर्भ की स्थिति उसक भीतर रहती है । भाष्यकार पतंजलि ने '' शब्दस्पर्श रूपरसगन्ध स्थानगुणानास्त्यानस्त्यान स्त्री'' स्त्यै शब्द शब्दसंघातयोः यहॉ शब्द तथा संघात अर्थ ने '' स्त्यै '' धातु का प्रयोग हुआ है । यास्क ने '' स्त्रियः एता शब्दस्पर्शगन्धारिण्यः (निरूक्त अध्याय 4/खण्ड 20)[1]

1 पुरूरवा मा गृधा । मा प्रपप्तो मा त्वावृकासोआशिवासउसन् न वै स्त्रैणानिसत्यानिसन्तिसालावृकाणाहृदयान्वेता । (ऋ10 /95/16)[2]

यत्स्थालिसिंचति न दारूमय तस्मात्पुमान्दायाद स्त्र्यदाद्यादथ यत्स्थालिपरास्यन्ति न पुमासमथस्त्रिय एवातिरिच्यते ।। (मैत्रायणिसंहिता 4/6/4)[3]

ओम् इहैवस्तं मा वियौष्टं विश्वमार्युव्यशनुतम् क्रीडन्तौपुत्रैर्नप्तृभिर्योमानौस्वेगृहे (ऋ. 10/85/42)[4]

तत्कालीन समयानुसार वेदों मे अगर इन्द्र वरूण मित्र अश्विनीकुमार और अग्नि जैसे पुरूष देवता है तो सत्यवती मही उषा जैसी देविया भी है, ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में श्रीसूक्त मे श्री लक्ष्मी का तथा श्रीसूक्त देवीसूक्त अनेकविध सूक्त प्राप्त होते है जिनके द्वारा स्त्रीयों के वैविधता एवं सर्वशक्तिमान होने के तथा देवताओं के द्वारा भी पूजित किये जाना का बार बार वर्णन प्राप्त होते है । उसी क्रम मे देवियों के सहत्रनामावलियों का वर्णन प्राप्त होता है। श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनम् इष्णनिषाणमुमइषाणसर्वलोकमइषाणः (पु सू 2 अ 21 म)[5] इस प्रकार से कहा जा सकता है, कि वेदो मे स्त्री विषयक ज्ञान एवं तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार हर समाज मे स्त्रीयों के लिये प्राप्त साधन एवं अनेक अवसर प्रदान किये जाते थे जिस कारण से सामाजिक परिवेश और तत्कालीन सम्पूर्णदायित्व स्त्रीयो के उपर रहते थे।

जिस कारण से सामाजिक निर्वहन तथा अन्य कार्य और गृह सम्बन्धि कार्य समयानुसार किया जाता था । ऐसे ही पुराणो मे भी यत्र तत्र स्त्री सम्बन्धि वर्णन मिलता हैजिसके अनेक उदाहरण मिलते है । पुराकालीन समय में ऐसी व्यवस्थाये की जाती थी जिससे से की समयानुसार यह व्यवस्था की जातीथी । रामायणकालीन समयानुसार भी ऐसे वर्णन देखने को मिलतेहै जिसके द्वारा यह सिद्ध होता है कि प्राचीनकाल से ही ऐसे अनेक दृश्य देखने मे आते है।

पुराणोंमें स्त्री विमर्श

पुराणों में तो स्त्री को साक्षात् देवी का स्वरूप मानकर पूजा अर्चना का विधि विधान निरूपित किया गया है । एवं दैवी को शक्ति को प्रदर्शित करने तथा उसके महत्व को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु श्रीमद् देवीभागवत नामक पुराण की रचना की गयी है जिसमें इस सम्पूर्ण चराचर जगत की उत्पति स्थिति लय संहार का कार्य उसी दैवी के अधीन है भारतीय संस्कृति मे जितने भी देवता भगवान या महापुरूष अवतरित हुये है सबने एकमत से अपने उत्कर्ष का विषय नारी स्वरूपा भगवती का ही स्वीकार किया है इसमे लेशमात्र भी सन्देह नही है । पुराणसाहित्य भारत की संस्कृति का अभिन्न अंग है जिसके द्वारा भारत की तात्कालीन सभी संस्कृति सभ्यता संस्कारोवेश परिवेश तथा सामाजिक नीति रीति और कुरीतियो एवं सम्पूण व्यवस्था का वर्णन प्राप्त होता है । साथ ही स्त्री विषयक सम्पूर्ण विषयों का ज्ञान प्राप्त होता हैजिसमे स्पष्टतया स्त्रीयो को उन्नत शिक्षित संस्कारित प्रदर्शित किया गया है । जिनका सामाजिक संरचना और नैतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका थी भागवतमहापुराण मे स्त्री के विषय में स्थलों में वर्णन मिलताहै जिसमेदेवी को भक्ति के रूपमे प्रदर्शित किया गया है । यहा तक की जो भारत की अमूल्य निधी ज्ञान और वैराग्य की पराकाष्ठा है उसको भी भक्ति का ही पुत्र रूपमें स्वीकृत किया गया है । यथा–

भक्तिसुतौ तौ तरूणो गृहित्वाप्रेमकरूपासहसाविरासीत्

(भागवत् .....) एवं प्रकारेण स्त्री के स्वतन्त्रा विषयक बहुविध वर्णन अनेक स्थलो पर प्राप्त होता है । यत्र नारर्यस्तुपूज्यन्तेरमन्ते तत्र देवता पुराण साहित्य में कहा जाता है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता इस उक्ति के साथ यह कहा जाता है कि पुराणकालीन समय में मनुस्मृतिकार ने कहा है कि नारी पुरूष शरीर में पुरूष का आधा भाग नारी एवं आधा भाग है । जिसमें भगवान शिव को अर्धनारीश्वर कहा जाता है । जिस कारण से सम्पूर्ण चराचर जगत को स्त्री स्वरूप में देखा जा सकता है जिसकों देखकर यह कहा जा सकता है कि नारी ही इस सम्पूर्ण जगत की अधिष्ठात्री शक्ति है जो सर्वशक्तिमय होकर पुरूष के साथ सृष्टि के उपादान कारण का निमित बनती है । सांख्यदर्शन मे स्त्री कें विषय मे माया कहकर सम्बोधित किया जाता है जिससे इसके स्वरूप का बोध हो सकता है ।

उपनिषदों में स्त्री विमर्श

उपनिषद भारतीय संस्कृति के गुह्यज्ञान का अद्वितीय एवं अनन्य श्रोत है जिसमें की अनेक विद्याओं के साथ साथ भारतीय समाज की झलक भी स्पष्ट प्रतीत होती है , जिसमे अनेक उपायो के साथ साथ स्त्रीयों के विषय मे भी यत्र तत्र वर्णन मिलता है ।

अथ य इच्छेद् दुहितामेंपण्डिताजायेत् सर्व मायुरियादितितिलौदनंपाचयित्वा, सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौजनयितवै (बृहदारण्यकोपनिषद् 6/4/17)[6]

प्राचीनकाल के अनेक स्थलों पर ब्राहमण ग्रन्थों का भी बहुत बडा महत्व आता है जिसके द्वारा स्त्रीयों के वास्तविक स्वरूप का वर्णन वहॉ दृष्टिगोचर होता है । बृहदारण्य कोपनिषद में वर्णन आता है " अथ च इच्छेदुहिता में पण्डिता जायेत सर्वमायुरियात् " स्त्री (बृहदारण्यकोपनिषद् 6.4.17)[7]

बृहदारण्यकोपनिषद में स्त्री को रत्नगर्भा कहा गया है और पृथिवी के समान रत्न प्रदान करने के समान उतम श्रेष्ठ पुत्र और पुत्री की प्राप्ति की जा सकती है और एक स्त्री कैसे एक तेजवान दिव्य रत्न प्राप्त कर सकती है उसका वर्णन है ।

हिरण्मयी अरणी याभ्यां निर्मन्थतामाश्विनौ तं ते गर्भ हवामहे दशमे मासि सूतये । यथाग्निगर्भा पृथिवी यथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी वायुर्दिशा यथा गर्भ एवं गर्भं दधामि तेसावित्ति । (बृहदारण्यकोपनिषद् 6.4.22)[8]

स्मृतियों मे स्त्री विमर्शः

स्मृतिकारों ने भी स्त्रियों के विषय मे अपने विचार प्रकट किये है जिसमें मनुस्मृतिकार ने कहा है ।

प्रजानार्थ महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः ।

स्त्रियः श्रियाश्च गृहेषु न विशेषोस्ति कश्चनः ।। (मनु 09/26)[9]

अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रुषा रतिरूतमा ।

दाराधीनस्त स्वर्गः पितृणामात्मनश्चह।। (मनु 09/28)[10]

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा तत्राफलाः क्रिया ।।(मनु 03/56)[11]

रामायण में स्त्री विमर्श

रामायणकालीन समय में स्त्री को विधिवत् एक सद्गृहिणी के रूप मे परिलक्षित किया गया है जो कि सम्पूर्ण गृहस्थ जीवन के प्रत्येक कर्म मे सहयोगी अर्धांगिनी के रूप मे सामाजिक पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुये राज्यसत्ता से लेकर युद्धस्थल तक सहचारिणी बनकर अपने दायित्वों को पूर्ण करते हुये दिखती है । यथा कैकई के चरित्र को देखा जाय तो ओ राजा दशरथ के साथ देवताओं के रक्षा के लिये साथ दिखती है साथ ही रामको वनवास दिलाकर कठोर ह्रदय वाली बन जाती है । वाल्मिकीरामायण के अनुसार रामायण का अर्थ राम की यात्रा से है । लेकिन रामायण के अनुसार इसका उद्येश्य सिर्फ यही नही है अपितु सीता के महानचरित्र का वर्णनकरना भी है ।

काव्यंरामायणं कृत्स्नंसीतायाश्चरितंमहत्
पौलस्त्यवधमित्येवंचकारचरितव्रतः ।।
(वाल्मिकी रामायण 1/4/7)[12]

यहॉ स्पष्ट प्रतीत होता है कि रामयाण मे जितना वर्णन प्रभु श्रीराम का है उतना ही महत्व सीताजी का है तथा विध वह श्रीराम के सापेक्ष हरकार्य में अग्रणी भूमिका मे है प्राचीन समय में स्त्रीयों को पूर्णतया हर कार्य में अग्रणी भूमिका में रखा जाता था जिसके अनेक उदाहरण रामायण आदि ग्रन्थों मे यत्र तत्र मिलता है । यथा श्रीमद्वाल्मिकीरामायण मे प्रसंगानुसार वर्णन है कि सीताजी को अग्रणी रखकर रामजी गमन कर रहे है ।

इतितौपुरूषव्याघ्रौमन्त्रयित्वामनस्विनौ ।
सीतामेवाग्रतः कृत्वाकालिन्दीम् जग्मतुर्नदीम् ।।
(वाल्मिकीरामायण 2/55/12)[13]

ब्राहमण ग्रन्थों में स्त्री विमर्श

ब्राहमण ग्रन्थों मे स्त्री को अनेक नामो से सम्बोधित किया गया जिसका कारण है कि स्त्री भी अनेक नाम रूपात्मक होकर विभिन्न गुण सम्पदा वाली है जिस कारण यथा नाम और गुणों कें अनुसार उनको सम्बोधित किया गया है ।

शतपथब्राहमण ग्रन्थ के भाष्यकार स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती के पुस्तक शतपथब्राहमण मे स्त्री को अबला न कहकर स्त्री को सर्वशक्तिमान कहा गया है यथा –यद्वेवास्याग होता वाहर्व्युवा ब्रहमा वाग्नीध्रो वा स्वयं वा यजमानो नाभ्याप यति तदैवास्यैतेन सर्व्वमाप्तं

भवति (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 15) [14] यज्ञ कर्म में भी यजमान को स्त्री के साथ की आवश्यकता होती है जिसके फलस्वरूप यज्ञ पूर्णता को प्राप्त होता है ।

यद्वेवापः प्रणयति । देवान्ह वै यज्ञेन यजमानांस्तानसुररक्षसानि ररक्षुर्न यक्षध्वम् इति तद्यदरक्षांस्तस्माद्रक्षा सि (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 16)[15]

ततो देवां एतं वज्रं ददृशुः यदपो वज्रो वाग्रामो व्रजो हि वाग्रापस्तस्माद्यनैता यन्ति निम्नं कुर्वन्ति यत्रोपतिष्ठन्ते निर्दहन्ति तत एतं वज्रमुदमच्छंस्तस्याभयेनाष्ट्रे निवाते यज्ञमतन्वत तथो एवैष एतं वज्रमुद्यच्छति तस्याभयेनाष्ट्रे निवाते यज्ञं तनुते तस्मादपः प्रणयति ।। (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 17)[16]

महाभारत में स्त्री वर्णन

महाभारत के समय में स्त्रीयों के सम्बन्ध में अनेक उपाख्यान उपलब्ध ह यथा शकुन्तलोपाख्यान, नलोपाख्यान, आदि अनेक उपाख्यान मिलतें है । कि यदि स्त्री मौन है अथवा असन्तुष्ट है तो वहा प्रकृति का रूठना भी माना जाता है क्योकि स्त्री को प्रकृति का स्वरूप माना गया है जिसकें द्वारा भविष्य में होने वाली संभावनाओं का अनुमान लगाया जा सकता है । एवं भविष्य की अनेक संभावनाओं को व्यक्त करती है । यथा कुन्ती के सिर्फ एक वाक्य'' अन्धों के अन्धे होते है जैसे शब्दो ने महाभारत जैसे युद्ध की स्थिति पैदा कर दी थी । इसी प्रकार से कह सकते है कि स्त्री विमर्श संस्कृत साहित्य में यत्र तत्र समुपलब्ध है जिससे भारतीय नारी की सर्वदा ही आदर्शवादिता रही है । जिससे की यहॉ की सार्वभौमिकता का प्रत्यक्ष दर्शन प्राप्त होता है

आधुनिकसंस्कृतसाहित्य मे स्त्री विमर्श

वर्तमान समय में स्त्री जितनी स्वाधीन और सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है उतना किसी अन्यकाल में नही था जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण आज के समय मे दृष्टिगोचर होता है जिसके कारण आज स्त्रियां स्वतन्त्र है उतनी स्वतन्त्रता सर्वत्र दिखाई देती है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण वर्तमान समय में स्त्रीयों की सभी क्षेत्र में बराबर की भागीदारी है आधुनिक काल की यदि बात की जाय तो इस समय स्वतन्त्रता काल से लेकर तथा अद्यावधि पर्यन्त जिस प्रकार हर क्षेत्र में स्त्रीयों की भागीदारी अभूतपूर्व तथा सर्वांगीणतया स्थिति में है । वर्तमान साहित्य में भी स्त्रीयों का यत्र तत्र वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें हिन्दी साहित्य के अनेक लेखकों कवियों तथा उपन्यासकारों सहित वर्तमान शिक्षा प्रणाली का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

शोधसार

इस प्रकार से उपर्युक्त शोधसार में आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक के स्त्रीविमर्शात्मक साहित्य के विषय में यथामति प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । तथा यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि संस्कृत साहित्य में स्त्रीयों के दशा एवं दिशा की स्थिति किस प्रकार रही है तथा किस प्रकार से स्त्रीयों की दशा में सुधारात्मक प्रयास हुये है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. यास्क ने'' स्त्रियः एता शब्दस्पर्शगन्धारिण्यः (निरूक्त अध्याय 4/खण्ड 20)1
2. पुरूरवा मा गृधा । मा प्रपप्तो मा त्वावृकासोआशिवासउसन् न वै स्त्रैणानिसत्यानिसन्तिसालावृकाणाहृदयान्वेता । (ऋ10 /95/16) 2
3. यत्स्थालिसिंचति न दारूमय तस्मात्पुमान्दायाद स्त्र्यदाद्यादथ यत्स्थालिपरास्यन्ति न पुमासमथस्त्रिय एवातिरिच्यते ।। (मैत्रायणिसंहिता 4/6/4)3
4. ओम् इहैवस्तं मा वि यौष्टं विश्वमार्युव्यशनुतम् क्रीडन्तौपुत्रैर्नप्तृभिर्योमानौस्वेगृहे (ऋ. 10/85/42)4
5. श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनम् इष्णनिषाणमुमइषाणसर्वलोकमइषाणः (पु सू 2 अ 21 म) 5
6. अथ य इच्छेद् दुहितामेंपण्डिताजायेत् सर्वमायुरियादितितिलौदनंपाचयित्वा, सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौजनयितवै (बृहदारण्यकोपनिषद् 6/4/17)
7. ''अथ च इच्छेदुहिता में पण्डिता जायेत सर्वमायुरियात् '' स्त्री (बृहदारण्यकोपनिषद् 6.4.17)7
8. हिरण्मयी अरणी याभ्यां निर्मन्थतामाश्विनौ तं ते गर्भ हवामहे दशमे मासि सूतये । यथाग्निगर्भा पृथिवी यथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी वायुर्दिशा यथा गर्भ एवं गर्भं दधामि तेसाविति । (बृहदारण्यकोपनिषद् 6.4.22)8
9. प्रजानार्थ महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः ।
10. स्त्रियः श्रियाश्च गृहेषु न विशेषोस्ति कश्चनः ।। (मनु 09/26)9
11. अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रुषा रतिरूतमा ।
12. दाराधीनस्त स्वर्गः पितृणामात्मनश्चह।। (मनु 09/28)10
13. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।
14. यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वा तत्राफलाः क्रिया ।।(मनु 03/56)11
15. काव्यंरामायणं कृत्स्नंसीतायाश्चरितंमहत्
16. पौलस्त्यवधमित्येवंचकारचरितव्रतः ।। (वाल्मिकी रामायण 1/4/7)12
17. इतितौपुरूषव्याघ्रौमन्त्रयित्वामनस्विनौ ।
18. सीतामेवाग्रतः कृत्वाकालिन्दीम् जग्मतुर्नदीम् ।। (वाल्मिकीरामायण 2/55/12)13
19. यद्वेवास्याग होता वाहर्व्युर्वा ब्रहमा वाग्नीध्रो वा स्वयं वा यजमानो नाभ्याप यति तदैवास्यैतेन सर्व्वमाप्तं भवति (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 15)14
20. यद्वेवापः प्रणयति । देवान्ह वै यज्ञेन यजमानांस्तानसुररक्षसानि ररक्षुर्न यक्षध्वम् इति तद्यदरक्षांस्तस्माद्रक्षा सि (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 16)15
21. ततो देवां एतं वज्रं ददृशुः यदपो वज्रो वाग्रामो व्रजो हि वाग्रापस्तस्माद्यनैता यन्ति निम्नं कुर्वन्ति यत्रोपतिष्ठन्ते निर्दहन्ति तत एतं वज्रमुदमच्छंस्तस्याभयेनाष्ट्रे निवाते यज्ञमतन्वत तथो एवैष एतं वज्रमुद्यच्छति तस्याभयेनाष्ट्रे निवाते यज्ञं तनुते तस्मादपः प्रणयति ।। (शतपथब्राहमण प्रथमाध्याये प्रथम ब्राहमण प्रथम काण्ड 17)16